प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ग्रामीण महिलाएं एवं विकास कार्यक्रम : जोधपुर जिले की ग्रामीण महिलाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण है। जोधपुर शहर के पास ग्रामीण क्षेत्रों का अध्ययन है । महिला परिवार की धुरी है । यदि परिवार में महिला शिक्षित एवं स्वस्थ है तो उसका पुरा परिवार शिक्षित एवं स्वस्थ बना रहेगा । बौद्विक स्तर पर महिला विकास की समस्याओं का आंशिक और सीमित रूप से समाज सुधारकों के विकारों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता रहा है। 1970 के दशक में सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं के उद्धार, कल्याण व विकास की क्रांति सी उत्पन्न हुई । वर्ष 1975 को महिला वर्ष के रूप में मनाये जाने के कारण सम्पूर्ण विश्व में महिला विकास आन्दोलन बल पकडने लगा, परिणाम स्वरूप महिलाओं के विकास के लिए राज्य व केन्द्र सरकार ने अनेक नीतियां व कार्यक्रम बनाये एवं उन्हें क्रियान्वित किया। वर्तमान में महिला विषयक अध्ययन एक महत्वपूर्ण अध्ययन है और यह अध्ययन एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित हो गया। महिला विकास आधुनिक राजनीतिक सैद्धान्तिकरण का प्रस्थान बिन्दू है ।

इस अध्ययन में महिलाओं के विकास के लिए राजस्थान सरकार द्वारा बनाए गये विभिन्न कार्यक्रमों से महिलाओं मे शैक्षिक, आथिक एवं राजनैतिक विकास कितना हुआ है तथा विकास के मार्ग की प्रमुख बाधाऐं एवं चुनौतियां कौनसी है तथा विकास का गति देने के लिए क्या सुधार किए जा सकते है ।

इस शोध प्राक्कथन के सफल निर्देशन में श्रद्धेय गुरूवर प्रोफेसर के. एन. व्यास पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग के चरणों में नतमस्तक हुॅ क्योंकि उन्होने मेरे जैसे अकिचंन, अल्पज्ञानी को अपना शिष्य स्वीकार कर अनुग्रहित किया यह अध्ययन विषय मेरी जिज्ञासा एवं रूचि का था तथा आदरणीय प्रो.व्यास के आत्मीय पूर्ण व्यवहार, सरल हृदयता, सज्जनता, पुत्र तुल्य व्यवहार, विद्वता व आशीर्वाद से यह कार्य सफल हो पाया । प्रो. के.पी. सिंह पूर्व विभागाध्यक्ष एवं प्रो. शिव प्रकाश गुप्ता विभागाध्यक्ष का भी मुझे समय–समय पर सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला जिसके लिए मैं उनका आभारी हूॅ । साथ ही डा. जगमाल सिंह शेखावत डा. अमित व्यास डा.सन्दोप पुरोहित, डा. दुर्गा सोनी एवं डा.लोकेश शर्मा, इन्द्रसिंह का भी आभारी हूॅ जिनका सहयोग शोध पूर्ण करने में मुझे समय–समय पर प्राप्त हुआ ।

प्रो. डुगंर सिंह खींची, मेरे बड़े भ्राता, भाभी, भतीजे, मेरी धर्म पत्नी ने हमेशा मुझे कार्य करने की प्रेरणा दी तथा शोध कार्य पूर्ण करने के लिए पारिवारिक कार्यो से मुक्त रखा, तभी यह कार्य सम्पन्न हो पाया ।

इस अवसर पर मैं अपने माता–पिता का भी आभार प्रगट करना चाहुगा जिनके आशीर्वाद के बिना मैं आज यह कार्य पूर्ण नही कर पाता। मेरी माताजी की शिक्षा के प्रति रूचि ने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया है जिनका मैं ऋणी हुॅ ।

मै, मेरे परम स्नेही भाई प्रो. रमण दवे का भी आभारी हूॅ जिनके अथक प्रयासों एवं प्रोत्साहन के बिना मैं यह कार्य पूर्ण नही कर पाता उनका हृदय की गहराई से आभारी हु ।

साथ ही मैं श्री के.सी. गुप्ता, श्रो महेन्द्र सोलंकी एवं पंकज भटनागर का भी आभारी हुॅ । मैं उन सभी 200 महिला उत्तरदाताओं का भी आभारी हूॅ जिन्होने मुझे अध्ययन हेतु तथ्यों को उपलब्ध करवाया तभी यह कार्य पूर्ण हो सका ।

अन्त में मेरे शोध का इतना शोघ्र टाइप, फोटोस्टेट एवं बाइंडिग कर सुन्दर रूप देने में श्री महेन्द्र पुरोहित के प्रयत्नों का धन्यवाद देना चाहुंगा ।

दिनांक :: .....सितम्बर 2012 (**राजेन्द्र सिंह खींची**)

स्थान – जोधपुर ।